Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XI, Issue No. 22, July-2016, ISSN 2230-7540

अन्तर्द्न्दों का शमन करता है हास्य-व्यंग काव्य

Mukesh Kumar Upadhyay[1]* Dr. Mahesh Chandra Choudhary[2]

[1]Research Scholar, Narayan College, Shikohabad, Firozabad

[2]President Hindi Department, Narayan College, Shikohabad, District-Firozabad

----------X----------

आज का मनुष्य अन्तर्द्वन्द्वों से घिरा हुआ है। वह मुक्ति पाना चाहता है लेकिन कोई रास्ता दिखाई देता। ऐसे में मंचीय हास्य–व्यंग्य काव्य राहत प्रदान करता है। 'अन्तर्द्वन्द्व' का आशय है–मानव मन या अन्तःकरण में हो रही नित्यप्रति की उठापटक। यह प्रकट है और अप्रकटास भी। जहां प्रकट अन्तर्द्वन्द्व का कारण बाहरी होता है, वहीं अप्रकट अन्तर्द्वन्द्व का कारण आंतरिक। उदाहरण के लिए– भाई–भाई के मध्य जायदाद के बंटवारे से उत्पन्न अन्तर्व्यथा को प्रकट अन्तर्द्वन्द्व कहा जा सकता है जो बाहरी लोगों के देखने और समझने में आता है, वहीं एक निर्धन पिता अपनी बेटी के खिलौना मांगने पर अपनी असमर्थतावश जिस अन्तर्वेदना का अनुभव करता है, उसे अप्रकट अन्तर्द्वन्द्व का नमूना कह सकते हैं, क्योंकि इस प्रकार की अन्तर्पीड़ा केवल पिता ही अनुभव कर रहा होता है कोई अन्य इसका आभास नहीं कर पाता। समकालीन हास्य–व्यंग्य कविताओं में प्रस्तुत प्रकट एवं अप्रकट अन्तर्द्वन्द्व के कुछ उदाहरण यहां दर्शाए जा रहे हैं।

हास्य–व्यंग्य को ऊंचाई देने वाले कवि **अशोक चक्रधर** मानव जीवन में भाई–भाई के मध्य सम्पत्ति विवादों को लेकर स्वयं को आहत महसूस करते हैं।

कविता का अंश देखें :

''...ये जायदाद

इस तरह बंटेगी,

और मेरे निर्णय पर

कोई पार्टी नहीं नटेगी

कि पहला भाई इसे

दो हिस्सों में बांटेगा,

और दूसरा मरजी से

कोई सा छांटेगा।''

आजकल देशभर में 'अच्छे दिनों' का शोर है तो दूसरी ओर महंगाई की घटा भी घन की तरह घोर है। यह महंगाई नहीं तो और क्या है जो मानव–मन को द्वन्द्व के स्तर तक पहुंचा रही है। कवि **डा. नथमल झांवर** ने महंगाई को स्टेटस बढ़ाने वाला तथ्य बताकर मानव मन की द्वन्द्वात्मक स्थिति को मुखर रूप दिया है। उनकी कविता का एक अंश देखें :

''महंगाई महंगाई मत चिल्लाइए

ये तो आपको बुलन्दियों पर चढ़ाता है

महंगाई तो मेरे दोस्त

आपके स्टेटस को बढ़ाता है

आज जब साठ रुपये किलो में

टमाटर लाते हैं

सौ रुपये किलो के तेल में पकाते हैं

अस्सी रुपये किलो की मिर्ची के साथ

कितना स्वाद आता है

ये मत कहना हमें रुलाता है

अरे! आंसू तो इसलिए आता है

कि एक दिन वो भी था

जब आठ आने में टमाटर लाते थे

कितना पैसा लगा

अब साठ देने में

कितना आनन्द आता

ये हमारा स्टेटस नहीं

तो और क्या बढ़ाता है।।''

उपर्युक्त पंक्तियों में महंगाई को स्टेटस बढ़ाने वाला बताकर कवि महंगाई से त्रस्त आदमी की द्वन्द्वात्मक स्थिति का रूपायन करता है। साथ ही महंगाई के लिए उत्तरदायी नेतृत्व और

www.ignited.in

राजनीति पर परोक्षतः कटाक्ष भी करता है। 'आठ रुपये किलो में टमाटर' खरीदने वाले हाथ उसी वस्तु के लिए 'साठ' रुपये गिनते हैं तो एक विद्युत का सा करंट लगना अस्वाभाविक नहीं जो उसकी द्वन्द्वात्मक स्थिति को इंगित करता है। कहने का तात्पर्य यह कि समकालीन मंचीय हास्य–व्यंग्य कविता में मानव–जीवन के अन्तर्द्वन्द्व को विभिन्न कोणों से देखा, समझा और प्रकट किया है।

समकालीन मंचीय हास्य–व्यंग्य कविता में जहां मानव–जीवन के प्रकट अन्तर्द्वन्द्व का चित्रांकन किया गया है, वहीं अप्रकट अन्तर्द्वन्द्व की झलकियों से भी परहेज नहीं किया है। अप्रकट अन्तर्द्वन्द्व के अन्तर्गत उन बिम्बों को रखा जा सकता है जो व्यक्ति के अन्तर्मन में पीड़ा उत्पन्न करता है। इससे ग्रसित व्यक्ति अपने कष्ट को स्वयं ही अनुभव करता है। जहां प्रकट अन्तर्द्वन्द्व का कारण भौतिक अथवा बाह्य परिवेश होता है वहीं अप्रकट अन्तर्द्वन्द्व व्यक्तिगत अथवा दैवीय हो सकता है। इसी वजह से प्रकट अन्तर्द्वन्द्व जन समुदाय के द्वारा देखा और सुना जा सकता है जबकि अप्रकट अन्तर्द्वन्द्व नितान्त स्वयं से जुड़ा होने के कारण उसकी आहट बाहर कम और अन्दर अधिक ध्वनित होती है।

समकालीन मंचीय हास्य–व्यंग्य कविता में ऐसे अनेक उदाहरण विद्यमान हैं जो अप्रकट अन्तर्द्वन्द्व को बिम्बित करते हैं। अप्रकट अन्तर्द्वन्द्व के कुछ उदाहरण यहां प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

हास्य–व्यंग्यकार **प्रकाश 'पपलू'** ने 'सेंसर' नामक कविता के माध्यम से एक पुत्र जन्म पर बधाई के रूप में एक कविता प्रस्तुत की है जिसमें अप्रकट अन्तर्द्वन्द्व की गन्ध आती है, कविता का अंश देखें :

''बधाई हो बधाई

आपने पुत्र तो विकलांग पाया है

किन्तु खुशी की बात

यह है कि वो

सेंसर से पास होकर आया है।''

उपर्युक्त पंक्तियों में पुत्र जन्म की खुशी को दर्शाने हेतु 'सेंसर से पास होकर आया है'– जैसे शब्दों का प्रयोग किया है जो श्रोता अथवा पाठक के मन में गुदगुदी उत्पन्न करते हैं। सेंसर वह संस्था है जो फिल्मों की परीक्षा करती है और उसके अनुरूप प्रमाण–पत्र देकर स्तर का निर्धारण करती है। परन्तु नवजात पुत्र के स्वास्थ्य–परीक्षण हेतु डाक्टरों के बोर्ड या टीम के स्थान पर 'सेंसर' प्रतीक का प्रयोग निश्चित रूप से कवि की उर्वर मेधा को सूचित करता है। यहां सन्दर्भ विशेष को निरूपित करने वाला जो शब्द है वह है 'विकलांग'। कोई भी दम्पत्ति शारीरिक दृष्टि से दुर्बल, पीलिया आदि रोगों से ग्रसित पुत्र को पाकर भी बधाई गीत में सुखद अनुभूति प्राप्त कर सकता है, परन्तु पुत्र वह भी विकलांग– ऐसा सुनकर एक गहरी आह निकलना स्वाभाविक है। ऐसे कष्ट को माता–पिता न तो किसी के साथ शेयर कर पाते हैं और न इस पीड़ा का कोई सहज समाधान ही उनके तत्काल सामने होता है। फलतः विकलांग पुत्र जन्म की खुशी उस बालक के भविष्य और माता–पिता की आजीवन चिन्ता के रूप में अप्रकट अन्तर्द्वन्द्व को भी उद्भूत करती है।

हास्य–व्यंग्य को बुलन्दियों पर पहुंचाने वाले कवि एवं गीतकार शैल चतुर्वेदी ने भी अप्रकट अन्तर्द्वन्द्व के कुछ नमूने प्रस्तुत किये हैं। उनके गीत 'देश का क्या होगा भगवान' गीत का एक अंश उद्धृत करने योग्य है :

''मचल गई मेले में बिटिया

'लूंगी एक खिलौना'

मगर जेब में हाथ जो डाला, बाप हो गया बौना

आंख में आंसू भरकर बोला– 'ले ले मेरी जान'।''

उपर्युक्त गीतांश में बेटी का खिलौने के लिए जिद करना उसके अधिकार को ध्वनित करता है जबकि पिता द्वारा जेब में हाथ डालकर अपना बौनापन महसूस करना तथा आंखों में आंसू ले आना पिता की आर्थिक तंगी और विवशता को इंगित करता है। ऐसा पिता जो अपने बच्चों की सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति करने में भी स्वयं को बौना पाता है वह अपनी इस दयनीय दशा को किससे प्रकट करे! अर्थात् वह भीतर ही भीतर दुःखी होता है जो अप्रकट अन्तर्द्वन्द्व की परिधि में आता है।

कहने का तात्पर्य यह कि समकालीन मंचीय हास्य–व्यंग्य कविता में मानव–जीवन के प्रकट और अप्रकट अन्तर्द्वन्द्व को बड़ी बारीकी से बिम्बित किया है।

संदर्भः

प्रकाश 'पपलू' (कविता–सेंसर), देखें–जय कुमार 'रुसवा' (संपादक) हंगामा

शैल चतुर्वेदी, बाजार का ये हाल है (गीत–देश का क्या होगा भगवान)

अशोक चक्रधर के चुटकुले (बंटवारा)

डॉ. नथमल झांवर (कविता–महंगाई), देखें–अट्टहास (संपादक–शिल्पा श्रीवास्तव) दिसम्बर, 2011

Corresponding Author

Mukesh Kumar Upadhyay*

Research Scholar, Narayan College, Shikohabad, Firozabad

E-Mail – sirsaganjht@gmail.com